Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 7, July - 2023 Publication Date: 20/07/2023
शिक्षण संशोधन

DOIs:10.2018/SS/202307013 --:-- Research Paper / Article / Review

नानाजी देशमुख का देशज समाज कार्य हस्तक्षेप

डॉ. अभिषेक कुमार राय
अतिथि अध्यापक, समाज कार्य विभाग
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार
ई-मेल: Abhishekkumarrai2@gmail.com

सारांश: नानाजी को आज पद से नही उनके कद से याद किया जाता है, यह कद उन्हे उनके समाज कार्य के व्यवहारिक धरातलीय हस्तक्षेप से उपजे ग्रामीण समाज में बदलाव से प्राप्त हुआ है। नाना जी देशमुख का पूरा नाम श्री चंडिका दास अमृत राव देशमुख था। इनका जन्म11 अक्तूबर 1916 को महाराष्ट्र राज्य के हिंगोली जिले के कडोली गांव में हुआ था। इनका पूरा समय समाज के बीच रहते हुए समाज के कल्याण में बीता। संघ संस्कार से संस्कारित इस महापुरुष ने भारतीय राजनीति, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, भारतीय विकास और समाज कार्य के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया साथ ही सबके लिए एक आदर्श भारतीय मॉडल भी विकसित किया। गरीब परिवार में जन्में नानाजी का जीवन अभाव एवं गरीबी में बीता था। समाज में व्याप्त गरीबी, अशिक्षा, बेकारी को इन्होने निकटतम गहराई से देखा था। उनकी इसी सामाजिक गहराई ने उनको समाज सेवा की तरफ मोड दिया, जिसके माध्यम के रूप में नानाजी ने राजनीति एवं समाज कार्य को चुना। अपनी उच्चतर शिक्षा पिलानी जिला कॉलेज (बी. आई. टी. एस. पिलानी) राजस्थान से पूरी कर जनसंघ (आज की भारतीय जनता पार्टी) का महत्वपूर्ण हिस्सा बने और एक सफल राजनेता। अपने घनिष्ठ मित्र एवं प्रेरणास्रोत दीनदयाल उपाध्याय जी के संस्मरण में सामाजिक आर्थिक पुनर्रचना की प्रयोगशाला के तौर पर 20 अगस्त 1972 में दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान की स्थापना नई दिल्ली में की जो आज देश के उच्चतम शोध संस्थान में गिना जाता है। जिसकी परियोजनाएं उत्तर-प्रदेश के गोंडा, बलरामपुर, चित्रकूट (यूपी, एमपी) के साथ दिल्ली एवं महाराष्ट्र में भी चल रही है ।

मुख्य शब्द: नानाजी देशमुख, समाज कार्य, देशज समाज कार्य, समाज कार्य हस्तक्षेप ।

1. प्रस्तावना :

नानाजी के अनुसार “दीनदयाल शोध संस्थान का उद्देश्य गांधी जी एवं दीनदयाल उपाध्याय जी के मार्गदर्शन अनुसार गांव-गांव में प्रत्येक आबादी (जनता) को स्वावलंबी, स्वाभिमानी एवं कर्तुत्ववान (कौशलयुक्त) बनाने का प्रयास है”। इसी के अनुरूप उन्होने इसको व्यवहारिक धरातलीय रूप प्रदान करना आरंभ किया। नानाजी हमेशा कहते थे “मै अपने लिए नहीं, अपनों के लिए हूँ, अपने वो है जो पीड़ित एवं उपेक्षित है”। अपने इसी ध्येय वाक्य पर चलते हुए उन्होने कई क्षेत्रों की तकदीर बदल डाली। उनकी कई योजनाओं का उद्देश्य “हर हाथ को काम हर खेत को पानी” था। नानाजी का मानना था कि “समाज की असली सेवा सिर्फ समाज के बीच रहकर ही की जा सकती है”। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्होने सन 1978 में सक्रिय राजनीति से सन्यास लेकर अपना सम्पूर्ण जीवन समाज कार्य में लगा दिया। ग्रामीण विकास के क्षेत्र में शिक्षा, कृषि कल्याण, तकनीक विकास, सामाजिक संतुलन, ग्रामीण आजीविका, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पशुधन कल्याण, प्रकृतिक संरक्षण इत्यादि के स्वरूप में अपना बहुसंख्यक योगदान दिया। समाज सेवा का संकल्प लेकर आजीवन चलने वाले नानाजी ने देहावसान के बाद अपना पार्थिव शरीर भी दान कर दिया था, जिससे की उनके शरीर का प्रत्येक अंग मानव समाज की सेवा में काम आ सके। सामाजिक कार्य में उनके द्वारा दिये गए योगदान के लिए राष्ट्रपति द्वारा पहले पदम विभूषण सम्मान (1999) और बाद में मरणोपरांत सर्वोच्च भारतीय सम्मान भारत रत्न (2019) प्रदान कर सम्मानित किया। भारतीय समाज कार्य परिषद द्वारा नानाजी के जन्म दिन (11 अक्तूबर) को भारतीय समाज कार्य दिवस के रूप में मनाया जाता है और नानाजी के सामाजिक कार्यों को याद किया जाता है।

2. सामाज कार्य की प्रेरणा :

नानाजी देशमुख पर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी और दीनदयाल उपाध्याया की विचारधारा का व्यापक प्रभाव था, उनके आदर्श और सीख के कारण ही उन्होने समाज कार्य का रास्ता चुना और जीवन के अंतिम समय तक दृढ़ता से उसपर चलते रहे। राष्ट्रवादी नेता तिलक का नारा स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मै इसे ले कर रहूँगा और ब्रिटिश शासन के खिलाफ उनके हथियार स्वदेशी, स्वराज्य, विदेशी वस्तु का बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा का व्यापक प्रभाव था। तिलक कहते थे अच्छी शिक्षा अच्छे नागरिक का निर्माण कर सकती है। जिसके प्रयोग के

तौर पर नानाजी ने गोरखपुर में सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना (1950) की जहां गरीब बच्चों को कम खर्च में संस्कारित शिक्षा सुगम हुई। आज यह शिक्षा का केंद्र है और इसकी अनगिनत शाखाएं है। यहां से पढ़ाई कर निकलने वाले बच्चे समाज के हर क्षेत्र में उच्च पदों पर विराजमान है।

नानाजी तिलक द्वारा प्रकाशित अखबार मराठा एवं केसरी में भारतीय संघर्ष एवं परेशानियों के साथ उनके द्वारा दलित, उपेक्षित, बाल विवाह, गो-वध के लिए चलाये गए आंदोलन, समिति एवं सेवा कार्य के महत्व से परिचित थे। दलित उत्थान के लिए तिलक कहते थे यदि भगवान छुआछूत को मानते है, तो मै उस भगवान को नही मानता। उनके इसी विचार पर चलते हुए नानाजी ने दलित, आदिवासी के बीच रहकर उनके कल्याण का मार्ग खोजा। तिलक के गणेश उत्सव और शिवाजी जन्मोत्सव के माध्यम से सबको जोड़ने, एक राष्ट्र की परिकल्पना जिसमे देश के किसी हिस्से में कोई विपत्ति आए तो शेष देश को लगे कि यह विपत्ति उनकी अपनी है की प्रेरणा ने नानाजी को देश के अन्य हिस्सों में कार्य करने को प्रेरित किया। गांधी जी ने कहा था कि "भारत कि आत्मा गांव में बसती है। गांव के विकास के बगैर भारत कीमजबूत नीव मुमकिन नहीं"। जिसके लिए उन्होने ग्राम स्वराज की कल्पना की जिसमें उंच-नीच, भेद-भाव रहित समाज में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक आधार पर पीछे छूट चुकी आबादी को प्राथमिकता दी जाएगी। जहां ग्रामोद्योग, कुटीर उद्योग अपना कर गांव आत्मनिर्भर बनेंगे, जिसके लिए उन्होने खादी को आधार बनाया।

नानाजी के अनुसार मनुष्य की बुनियादी जरूरते जहां वह रहता है वही उसका उत्पादन करे वही उसकी खपत हो और प्रकृति का पूरक एवं सहयोगी बन कर आत्मनिर्भर विकास को बढ़ावा दे। उन्होने स्वच्छता को बल दिया और कहा स्वच्छ गांव और ग्रामोद्योग के आधार पर ही गांव आदर्श बन सकते है। उनकी रामराज्य की संकल्पना थी जिसमें किसी को कोई कष्ट न हो, भेद न हो, आत्मनिर्भर हो, समानता हो, समान अवसर की पहुच हो। गांधी जीवन में न्यूनतम जरूरतों पर बल देते थे। गांव, गरीब और ग्रामीण गांधी के केंद्र में होते थे। गांधी जी में सेवा कार्य की भावना और प्रयोगधर्मिता थी जिसे उन्होने कर के दिखाया और उसे अपने जीवन का अंग बताया। ठीक उसी प्रकार नानाजी भी गांव, ग्रामीण, आदिवासी, दलित कल्याण और ग्रामोद्योग, शिक्षा, कृषि विकास के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक पिछड़ें समाज को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया और उन्हें आत्मनिर्भर बनाया। न्यूनतम अवश्यकता में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करते हुए गांव की आत्मा को मजबूत करते रहे।

नानाजी दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन के अनुरूप अंतयोदय में लगे रहे। आज एकात्म मानव दर्शन का विचार शाश्वत, सार्वकालिक, सार्वत्रिक समस्त मानव जाति के कल्याण का मार्ग है। दीनदयाल जी का कहना था विकास का सीधा अर्थ है पक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति को योजनाओं एवं सुविधाओं का लाभ पहुचे यानि अंतयोदय। उन्होने व्यक्ति को समग्र एकाग्रता में देखा जिसमें मन, बुद्धि, शरीर एवं आत्मा का समावेश था। जिसने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास के लिए व्यष्टी, समष्टी, सृष्टि, परमेष्टी का चिंतन दिया। जो सम्पूर्ण मानवता एवं वैश्विक चेतना का चिंतन था। जिसके केंद्र में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा परिवार, परिवार से जुड़ा समाज, समाज से जुड़ा राष्ट्र और राष्ट्र से जुडें समस्त विश्व समाहित है। जिसमें सभी कारक का विकास क्रमिक होता है और वह एक दूसरे से जुड़कर अपना अस्तित्व कायम रखते है। जो समाज के निचले पायदान पर स्थित मनुष्य के जीवन स्तर में सुधार करने और उस मनुष्य को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करने के साथ विश्वबंधुत्व एवं वसुधैव कुटुंबकम की भावना को आत्मसात करता है। इसी ध्येय के साथ नानाजी ने इसका व्यवहारिक प्रयोग कर गांव के गरीब एवं उपेक्षित व्यक्ति के कल्याण और उनकी सुविधाओं तक पहुच बनाने में लगे रहे। उनका नारा था ग्रामोदय से राष्ट्रोदय। दीनदयाल जी का मानना था कि किसी भी राष्ट्र या किसी भी जगह के लिहाज से वहां का फार्मूला, वहां की विचारधारा, वहां की जो परिस्थितिजन्य चीजे होती है, जरूरी नहीं की वहां पर जितनी प्रभावी रही हो वह दूसरे जगह पर उतने ही कारगर हो। उसे युगानुकूल और देशानुकूल बनाकर उपयोग करना होगा नही तो वह विनाशकारी सिद्ध होगा। नानाजी ने इस दिशा में स्थानीय उद्यमिता, ग्रामोद्योग, शिक्षा, स्वास्थय, कृषि विकास, कौशल विकास के लिए अपना देशज उपक्रम चलाया और उसका सफल प्रयोग कर उसे स्थापित किया। जो आज भी स्थानीय क्षेत्र में अनवरत जारी है।

3. सामाजिक कार्यकर्ता के गुण :

एक देशज सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में नानाजी के अंदर कई गुण मौजूद थे, जिस पर आजीवन चलते हुए नानाजी ने सभी को प्रभावित किया और नई दिशा एवं नेतृत्व प्रदान किया। नानाजी के अंदर समाज सेवा की भावना, समाज के प्रति सहानुभूति एवं परानुभूति के साथ सोचने समझने की तीक्ष्ण क्षमता थी। समाज सेवा के उनके नैतिक मानक और लक्ष्य तय होते थे, जिसे वह समय से प्राप्त करते थे। नानाजी अपने प्रयोगों का लगनशीलता के साथ व्यापक अभ्यास करते थे। इन अभ्यासों से जानकारी और सीख प्राप्त कर उसे अन्य स्थानों पर अपनाते थे। वह स्वप्न द्रष्टा थे समाज की जरूरत, कठिनाई, आशा के प्रति वह गहराई से विचार कर उसके समाधान का प्रयास करते थे, ग्रामोदय विश्वविद्यालय उसी का एक प्रारूप था। नानाजी कुशल संगठनकर्ता थे उन्होने कई संस्थाओं की स्थापना जन-सहयोग एवं समाज की सहभागिता से की। नानाजी के अंदर कार्यकर्ता निर्माण की क्षमता प्रबल थी, जिसके माध्यम से उन्होने कई युवाओं और समाज दंपति को समाज की भलाई के लिए तैयार किया।

नानाजी संवाद के महत्व से परिचित थे, वह सभी कार्यकर्ताओं, नौकरशाह, राजनीतिज्ञ से पत्र के माध्यम से अनवरत पत्राचार करते रहते थे और सबको अपना मार्गदर्शन देते थे। नानाजी के अंदर युवाओं के प्रति लगाव था वह युवाओं के महत्व, उनकी क्षमता और ऊर्जा से परिचित थे। उनका मानना था कि युवाओं के माध्यम से गांव की कायापलट की जा सकती है, इसलिए चाहे वह दीनदयाल शोध संस्थान हो या गांव के सामाजिक कार्यकर्ता सभी जगह युवाओं को प्राथमिकता देते थे, उनको प्रशिक्षण, नेतृत्व एवं मगदर्शन देकर उनको तैयार कर समाज कार्य की तरफ मोड़ते थे। नानाजी के अंदर सामाजिक समझ एवं समाज के प्रति स्वप्न (लक्ष्य) का मजबूत आधार था, जिसके चलते वह सामाजिक समस्याओं के समाधान की कला में कुशल थे।

एक बार एक युवा कार्यकर्ता ने नानाजी को पत्र लिखा कि मै अब सामाजिक कार्य से मुक्त होकर व्यक्तिगत जीवन में जाना चाहता हूँ। मेरे परिवार में आर्थिक दिक्कतें आ रही है और अब मै परिवार की मदद करना चाहता हूँ, आप मेरी सहायता करे। उस समय नानाजी के पास न इतने अधिक पैसे थे ना ही कोई साधन जिससे वह उस कार्यकर्ता की मदद कर सकते, लेकिन नानाजी के पास जितने पैसे थे उससे वह उस कार्यकर्ता की

धूमधाम से शादी कराई और उसके रोजगार के लिए किराए के मकान में एक स्कूल की स्थापना की जहां दोनों पति-पत्नी अध्यापन के मध्यम से रोजगार प्राप्त कर सके और समाज के कमजोर बच्चों को शिक्षा मिल सके। आज वह सरस्वती शिशु मंदिर (स्कूल) देश में अपनी कई शाखाओं के साथ वट वृक्ष बन कर कई लोगों को रोजगार और संस्कारित शिक्षा प्रदान कर रहा है। कई विचारकों से मिली समझ और सीख ने नानाजी को समाज कार्य में साधन और साध्य का मार्ग प्रबल किया, जिसका उपयोग वह जीवन के अंतकाल तक समाज की भलाई के लिए करते रहे।

4. देशज सामाज कार्य हस्तक्षेप :

प्रचारक एवं राजनीति के जीवन काल में नानाजी गांव-गांव घूमा करते थे उस समय उन्होने देखा कि गांवों की स्थिति बहुत दयनीय बनी हुई थी। गांव सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास में पिछडें हुए थे। इसकी काया पलटने के उद्देश्य से उन्होने यूपी के गोंडा जिले से व्यवहारिक धरातलीय देशज समाज कार्य हस्तक्षेप आरंभ किया। गोंडा (यूपी) में नानाजी ने कई योजनाएं चलाई एवं संस्थानों की स्थापना की अपने मित्र जयप्रकाश नारायण एवं उनकी पत्नी प्रभावती देवी की याद में दीनदयाल शोध संस्थान के अंतर्गत 54 एकड़ के विशाल परिसर में "जय प्रभा ग्राम" की स्थापना (25 नवंबर 1978) तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी के हाथो करवाई। सामाजिक पुनर्रचना का यह प्रक्रम सामाजिक सहभाग एवं कपार्ट के आर्थिक सहयोग से आरंभ हुआ। ग्रामोदय योजना के तहत उन्होने नारा दिया "हर हाथ को काम, हर खेत को पानी"। क्षेत्र विकास के लिए चार सूत्र- शिक्षा, स्वावलंबन, स्वास्थ्य और समरसता तय किए। जिसने भारतीय ग्रामीण जीवन के विकास की नीव रखी। अशिक्षा, बेरोजगारी, निर्धनता, अंधविश्वास, शोषण से ग्रसित थारु समाज को जीवन जीने की राह दिखाई। अपने कार्यकर्ताओं के माध्यम से थारु समाज के साथ उठना-बैठना आरंभ किया उनको बताया कि वे उनके अपने है और उनके लिए वह कुछ करना चाहते है, जिससे उस समाज में संबंध का निर्माण हुआ और वह समाज अपनी समस्याओं पर बात रखना आरंभ किया। थारु समाज के लिए एक महीने का समाज सचेतक प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। शिविर के माध्यम से समाज ने स्कूल की मांग की जो इमिलिया गांव में स्कूल खोलकर पूरी की गई। इसके अलावा बच्चों के लिए छात्रावास, भोजन, कपड़े, किताबें और स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था की गई।

नानाजी ने देखा गोंडा के ग्रामीण किसान साहूकार के कर्ज और रोज के खाने की चिंता में है। किसान साधन विहीन होने से अपनी सीमित जमीन से अच्छी उपज नहीं प्राप्त कर पा रहे है, जिसके चलते वह सामाजिक कार्यों में भी रुचि नहीं दिखा पा रहे है। इसके समाधान के रूप में नानाजी को इनकी उपज बढ़ाने का विकल्प नजर आया जिसके लिए सिंचाई आवश्यक थी। सिंचाई होने से किसान जमीन से दो से अधिक फसल निकाल कर अपनी आमदनी बढ़ा कर निर्धनता कम कर सकता था। नानाजी ने संस्थान के माध्यम से दो साल में 20 हजार नलकूप लगाने की घोषणा की, जिसे तात्कालिक समय में कुछ वर्ग द्वारा हास्यपद माना गया। उनका मानना था कि यह संभव नही होगा। लेकिन संस्थान ने गोंडा जिले के 2001 गांवों में 5 एकड़ या उससे कम जमीन वाले किसानों के खेतों में 27518 नलकूप लगवा दिये। केंद्र सरकार ने इसकी सच्चाई जानने के लिए कृषि मंत्रालय की संस्था "पीपुल्स एक्शन फॉर डेवलपमेंट" से जांच कराई। संस्था ने अपनी रिपोर्ट में पाया कि "संस्थान द्वारा घोषित नलकूप आंकड़ें से अधिक नलकूप कार्यरत है। इतने अल्प समय में किसी सरकारी सहायता से किसी संस्था द्वारा इतना व्यापक लाभ गरीबों तक पंहुचाने वाला रचनात्मक कार्य नहीं हुआ है"। इस सफलता का स्रोत था स्थानीय जनता का सहयोग, स्थानीय संसाधन, स्थानीय तकनीक और कौशल जिसके उपयोग से बांस आधारित नलकूप तैयार हुए। तीन इंच गोलाकार आकृति के पके हरे बांसों के टुकड़े एक दूसरे के साथ जोड़कर डेढ़ सौ फुट गहराई के नलकूप बनें, जिसमें नारियल की रस्सी का उपयोग बांसों को जोड़ने एवं नलकूप की तली की जाली के रूप में किया गया। इसी के साथ संस्थान (1979) ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के साथ कृषि में अनुसंधान के लिए 39 एकड़ का एक कृषि विज्ञान केंद्र विकसित किया और वहां पर वैज्ञानिकों ने परंपरागत ज्ञान परंपरा एवं तकनीक के प्रयोग से उस जमीन पर साल में दो से अधिक फसल निकालने का माध्यम उपलब्ध करा कर वहां के किसानों को इसे अपनाने के लिए प्रेरित किया। जहां 1984 तक 4.7 लाख एकड़ कृषि जमीन पर किसान दो फसल तथा 51711 एकड़ जमीन पर तीन फसल लेने लगे थे। गांव में शिक्षा और रोजगार के साथ स्वावलंबन को बल देने के लिए उन्होने पॉलिटेकनिक केंद्र की (1980) स्थापना की। उनका मानना था कि शिक्षा के साथ छात्रों में कौशल भी होना चाहिए। किसानों को स्वावलंबीं बनाने के लिए पशुपालन, मछली पालन, मुर्गी पालन जैसे कृषि आधारित उपक्रमों के महत्व को समझाया और कम लागत में कैसे आय के साधन को बढ़ाया जाय उसको बताया। गांव में आपसी समरसता के लिए गांव के तनाव, संघर्ष, मुकदमेबाजी में समय एवं धन की बर्बादी की जगह आपसी सहमति और ग्राम पंचायत से निर्णय लेने की शिक्षा एवं महत्व से अवगत कराया। नानाजी के प्रयासों से चिन्मय ग्रामोदय विद्या मंदिर (1981), भक्तिधाम प्रकल्प (1985), ट्राइफेड जूनियर हाई स्कूल (1988), रामनाथ आरोग्यधाम (1994) के साथ जय हनुमान बनवासी छात्रावास की स्थापना से समूचे क्षेत्र के ग्रामीण विकास को बल प्राप्त हुआ।

गोंडा के ग्रामीण क्षेत्रों में मिली सफलता के बाद नानाजी ने महाराष्ट्र के पिछड़े जिले बीड में सामाजिक कार्य (1987) आरंभ किया। कम वर्षा वाले इस क्षेत्र में उनके द्वारा जल संरक्षण, तालाब खुदाई, पुराने तालाबों की मरम्मत, वृक्षारोपण जैसे उपक्रम चलाये गए। जन-सहभागिता के आधार पर चलने वाले इन उपक्रमों में युवाओं की सहभागिता अधिक रहती थी। पढ़ें-लिखे नौकरीपेशा वाले लोग भी इस अभियान में अपना योगदान देते थे। नानाजी के मार्गदर्शन में यहां तीस दिवसीय श्रम साधना शिविर लगाए जाते थे। गांव से शिविर वासियों के लिए भोजन की व्यवस्था सहयोग से की जाती थी। जन-सहभागिता की ताकत ने यहां के पुनुरुत्थान में बल दिया। संस्थान के सहयोग से यहां गुरुकुल, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहयोग से कृषि विज्ञान केंद्र, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से जन शिक्षण संस्थान की स्थापना कर उसको संचालित किया गया। इसके साथ गोकुल शिशु वाटिका एवं गोकुल पालना घर जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से नानाजी ने इस क्षेत्र के विकास को गति देने का प्रयास किया। नानाजी के प्रयास से महाराष्ट्र के नागपुर जिले में संस्थान की तरफ से बाल केंद्र की स्थापना (1991) की गई, जिसका उदघाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर के द्वारा की गई। यहां पर बालक एवं बालिकाओं के विकास के लिए योग, प्राचीन परंपरागत मैदानी खेल, मेरी बचत योजना, चित्रकला, मूर्तिकला, विज्ञान के प्रयोग, पुस्तकालय, अभिनय, शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देकर प्रशिक्षित एवं संस्कारित किया जाता है। इसके अलावा शहरी गरीब बस्तियों में बच्चों के लिए बाल संस्कार एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया जाता है।

नानाजी ने चित्रकूट (1989) को अपनी कर्मभूमि बनाते हुए गरीब, पीड़ित, शोषित, वंचित समाज के लिए संस्थान के माध्यम से चित्रकूट परियोजना आरंभ की और अपने जीवन के अंतिम काल तक उसमें लगे रहे। अपने प्राण भी उन्होने अपनी चुनी हुई कर्मभूमि पर ही त्यागे। ग्रामीण विकास को जमीन पर उतारने के लिए नानाजी ने अस्सी गांवों का चुनाव किया और शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक समरसता का कार्य आरंभ किया।उनका कहना था कि "यह साधना पथ है। दीनदयाल जी की अधूरी साधानपूर्ति और सामाजिक-आर्थिक विषमताओं से मुक्ति एवं भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित एक सशक्त, समृद्ध एवं गतिमान भारत के नव-निर्माण के उनके अधूरे सपने को साकार करने का"। इसी ध्येय के साथ गनीवा राजपुर, यू.पी. में तुलसी कृषि विज्ञान केंद्र की स्थापना के साथ कार्य आरंभ किया। 12 फरवरी 1991 में चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय की नीव रख उच्च शिक्षा की सुगमता ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्ध कराई और मार्गदर्शन देते रहने के लिए इसके कुलाधिपति रहे। ग्रामोदय विश्वविद्यालय देश का पहला ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित उच्च शिक्षण संस्थान है, जहां ग्रामीण विकास को बल देने के लिए तकनीक, कौशल, मानव संसाधन प्रबंधन की शिक्षा प्रदान की जाती है। आज इस स्थान को नैक द्वारा ए ग्रेड प्राप्त है।

नानाजी ने ग्रामीण बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए सुरेन्द्र पाल ग्रामोदय विद्यालय (1991), आदिवासी बच्चों के समूचे विकास के लिए रामनाथ आश्रमशाला (1992), कृष्णादेवी बनवासी बालिका आवासीय विद्यालय (1994), 63 एकड़ में फैले मझगांव कृषि विज्ञान केंद्र का संचालन (1993) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से प्राप्त किया, जहां अलाभकारी कृषि को लाभ में बदलने का प्रशिक्षण दिया जाता है। चित्रकूट में आजीवन स्वास्थ्य कल्याण के लिए 53 एकड़ में आरोग्य अनुसंधान केंद्र की स्थापना (1996) की जहां योग, आयुर्वेद, प्रकृतिक चिकित्सा उपचार के साथ शोध कार्य चलता है। प्रशिक्षित नागरिक समाज के सहयोग से "दादी माँ का बटुआ" नाम से स्थानीय 33 जड़ी-बूटी से निर्मित दवाओं का गांव-गांव में प्रसार किया। जिससे स्थानीय जड़ी-बूटी, प्रकृतिक चिकित्सा का ज्ञान मजबूत हुआ और व्याप्त अंधविश्वास, झाड-फूक, कुपोषण, मातृत्व-शिशु मृत्यु दर कम करने में सहायता मिली साथ ही आज यह रोजगार और स्वावलंबन का माध्यम भी है।

समाज शिल्पी आह्वान के माध्यम से नानाजी ने गांव-गांव में व्याप्त पलायन, बेरोजगारी, अशिक्षा, स्वास्थ्य असुविधा, बाल विवाह और गंदगी की ढेर पर बैठे गांवो में विकास कार्य किए, जिसके अंतर्गत समाज शिल्पी (शिक्षित युवाओं) को गांव में रहकर कार्य करना होता था। इस अभियान में चालीस युवाओं ने भाग लिया। इस अभियान का परिणाम सकारात्मक रहा, लेकिन इसमें ग्रामीण महिलाओं के साथ समान रूप से विकासात्मक कार्य नहीं हो पा रहे थे। जिसके समाधान के लिए नानाजी ने पति-पत्नी के जोड़ों को समाहित कर समाज शिल्पी दंपति अभियान चलाया। इस अभियान में समाज शिल्पी दंपति ने गांव में रहकर ग्रामीण विकास की जमीन तैयार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाज शिल्पी दंपति के लिए आवश्यक था कि उनकी उम्र 35 वर्ष से अधिक ना हो, दो से अधिक बच्चे ना हो वह स्नातक की शिक्षा पूरी किए हो और कम से कम पांच वर्ष गांव में रह सके। इनके माध्यम से गांव-गांव में कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्यमिता के साथ स्वावलंबन को बल मिला। स्वावलंबन अभियान (2002) की शुरुवात की जिसके माध्यम से गांव-गांव में स्वरोजगार के प्रशिक्षण प्रदान किए गए। गांव विकास समिति का गठन कर बचत समूह का निर्माण किया गया। बचत समूह के माध्यम से ग्रामीण अपनी क्षमता के अनुरूप प्रति माह 20 रुपए से 100 रुपए तक बचत करना आरंभ किए। जिसके परिणाम से गांव में साहूकार से कर्ज लेने की प्रवित्ति कम हुई और गांव मजबूत हुए। महिलाएं स्वरोजगार के रूप में बैग, पापड़, आचार, मसाले, डिटर्जेंट, साबुन इत्यादि बना कर पैसे कमाने लगी और आर्थिक उन्नति के साथ उनको परिवार में सम्मान भी मिलने लगा।

गौ-वंश विकास एवं अनुसंधान केंद्र की स्थापना (1996) कर नानाजी ने स्थानीय पशु नस्ल सुधार एवं वनवासी आजीविका के अवसर उपलब्ध कराये। जिससे क्षेत्र में पशुधन एवं पधु आधारित उत्पाद ने स्वावलंबन की दिशा में कई अवसर उपलब्ध कराये। प्रकृतिक संसाधन से भरे चित्रकूट में उद्यमिता विद्यापीठ (1996) की स्थापना की जहां 40 वर्ष या उससे कम के युवकों एवं युवतियों के लिए 19 उत्पादन सह प्रशिक्षण इकाई के साथ 4 छात्रावासों का निर्माण कराया। जहां औद्योगिक प्रशिक्षण प्रदान कर स्वरोजगार के माध्यम से कृषि उपज के साथ वन आधारित उत्पाद का समुचित उपयोग कर लाभ कमाना सिखाया गया, जिससे क्षेत्र में स्वावलंबन को गति मिली। स्वावलंबन अभियान के तहत चयनित 80 गांवों में 2005 तक सभी गांवो को स्वावलंबी बनाकर प्रथम चरण पूरा किया गया तथा 2011 तक 518 गांवों को इस अभियान में पूरा करते हुए इस अभियान को निरंतर एवं स्थायी बनाए रखने के लिए उन गांवों को गठित गांव विकास समिति को सौप दिया गया। स्वावलंबन अभियान की सफलता को देश एवं विदेश में खूब सराहा गया कई लोगों ने इस पर शोध किए और इस मॉडल को अन्य स्थानों पर भी अपनाया जाने लगा। नानाजी कहते थे "जिस प्रकार नूतन संसार में सामाजिक दायित्व का बीजारोपण करना परिवार का दायित्व होता है, उसी प्रकार समाज में विकास एवं भाईचारे की चेतना का बीजारोपण करना मानव समाज का कर्तव्य है"। नानाजी ने गांव-गांव में जाकर छोटी-छोटी सभाएं, बैठके की लोगों को समझाया कि आपसी झगड़े, मुकदमें से बचे उसपे खर्च होने वाले धन से बचे उसे सुलझाने के लिए आपसी बातचीत, समझ, सहयोग और ग्राम पंचायत की बैठक से हल करें। इस प्रकार के प्रयास से 80 से अधिक गांव विवाद मुक्त बने और इसको समझने के लिए इलाहाबाद हाई कोर्ट के वकीलों का एक प्रतिनिधि मंडल भी वहां गया था। इस प्रकार के प्रयास से कई गांवों में आज भी भाईचारे की परंपरा बनी हुई है।

नानाजी ने गुरुकुल आश्रम पद्दती पर आवासीय गुरुकुल (2000) की स्थापना की जिसमें संस्थान से अवकाश प्राप्त सक्षम एवं शिक्षित दंपति के साथ एक आवासीय परिसर का विकास किया जहां स्वावलंबन अभियान के तहत उपेक्षित गांव के पिछड़े परिवार के बच्चों को शिक्षा के साथ परिवार, सामाज, मानवीय व्यवहार का ज्ञान प्रदान किया जाता है। यहां बच्चे पूरे साल रह कर अभ्यास करते है और साल में एक माह के लिए अपने घर जाते है। संस्था ने चित्रकूट दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से यहां कई उपक्रम की स्थापना नानाजी के मार्गदर्शन में की और उसे आगे बढ़ाया। जिसमें परमानंद आश्रम, ग्रामोदय दिशा दर्शन केंद्र, नन्ही दुनिया, राम दर्शन, जल प्रबंधन, जन शिक्षण संस्थान इत्यादि शामिल है। नानाजी का मानना था कि समाज के परस्परस्वावलंबन की भावना से ही ग्रामोदय संभव होगा। इस प्रकार उन्होने ग्रामोदय से राष्ट्रोदय के संकल्प को पूरा करने के लिए आजीवन अपने समाज कार्य हस्तक्षेप के माध्यम से प्रयासरत रहें। नानाजी ने समाज कार्य के क्षेत्र में इतने हस्तक्षेप किए है कि उनके समाज कार्य हस्तक्षेप को एक लेख में समाहित नहीं किया जा सकता है बल्कि उस पर कई किताबें लिखी जा सकती है।

5. निष्कर्ष :

देशज समाज कार्य हस्तक्षेप के माध्यम से नानाजी देशमुख ने समाज कार्य के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उन्होने शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक समरसता के माध्यम से गांधीजी एवं दीनदयाल जी के सपनों को व्यवहारिक धरातलीय स्वरूप प्रदान किया। गांव, गरीब, आदिवासी के कल्याण और विकास से व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन जीने की दशाएं उपलब्ध कराई। गांव में शिक्षा के लिए विद्यालय, विश्वविद्यालय, छात्रावास, गुरुकुल की स्थापना कर शिक्षा से कोसों दूर उपेक्षित समाज को शिक्षा से जोड़ा और उनके लिए उद्यमिता प्रशिक्षण, समूह गठन, बचत समहूके माध्यम से स्वरोजगार का सृजन किया। स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान एवं शोध के लिए प्रकृतिक चिकित्सालय का निर्माण किया। प्राकृतिक जड़ी-बूटी के संरक्षण और ज्ञान को मजबूती देने के लिए दादी माँ का बटुआ प्रारूप विकसित कर स्थानीय आदिवासी समाज को स्वरोजगार का अवसर प्रदान किया साथ ही स्वास्थ्य को स्वावलंबन से जोड़ा।

नानाजी ने अपनी समर्थता से आत्मनिर्भर होने के लिए स्वावलंबन मॉडल की रूपरेखा प्रस्तुत ही नही की बल्कि उसके लिए आवश्यक स्थानीय दशाओं का निर्माण भी किया। जो आत्मनिर्भर भारत की कल्पना से आगे की कल्पना है। गांव की समस्या गांव में रहकर ही समझी जा सकती है और उनका समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है। गांव के समग्र विकास के लिएनानाजी ने समाज शिल्पी एवं समाज शिल्पी दंपति का मॉडल विकसित किया। जिसने गांव की समस्या को खत्म करने और उनकी अवश्यकता पूरा करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। ग्रामीण कृषि विज्ञान केंद्र एवं अनुसंधान, पशु पालन एवं पशु नस्ल सुधार के माध्यम से ग्रामीणों को खेती को लाभकारी बनाने और पशु आधारित उत्पाद से स्वावलंबन के अवसर उपलब्ध कराये। गांव में समरसता कायम करने के लिए गांवों को आपसी समझ और सहयोग से विवाद मुक्त गांव के लिए प्रेरित किया क्योकि समाज तभी प्रगति कर सकता है जब समाज में शांति, सद्भाव एवं सहयोग की भावना हो और विवाद नहीं हो। इस प्रकार ग्रामोदय से राष्ट्रोदय की परिकल्पना प्रस्तुत करने वाले नानाजी के समाज दर्शन,समाज कार्य जीवन, समाज कार्य हस्तक्षेप से सीख लेने और उसके अनुरूप गांव, ग्रामीण के कल्याण एवं कायाकल्प पर सोचने की अवश्यकता है।

संदर्भ :

1. चौहान गौरव. (2015). नानाजी देशमुख जीवन दर्शन. नई दिल्ली: अमरसत्य प्रकाशन.
2. दीनदयाल शोध संस्थान. (2017). विराट पुरुष शिक्षाविद नानाजी देशमुख. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
3. दीनदयाल शोध संस्थान. (2017). विराट पुरुष समाजशास्त्री नानाजी देशमुख. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
4. कुमार राकेश. (2019). भारत रत्न नानाजी देशमुख. नई दिल्ली: डायमंड पॉकेट बुक्स.
5. नामदेव डॉ. महेंद्र कुमार. (2020). ग्रामीण विकास का चित्रकूट मॉडल. चेन्नई: नेशन प्रेस.
6. पीएमओ इंडिया. (2017, अक्टूबर 11). PM Modi addresses a gathering on the birth anniversary of NanajiDeshmukh.Retrieved जुलाई 2, 2020,fromhttps://www.youtube.com/watch?v=pNQxB45LVXU
7. थिंक इंडिया ओआरजी. (2020, अप्रैल 1). The life of BharatRatnaNanajiDeshmukh.Retrieved जुलाई 2,2020,fromhttps://www.youtube.com/watch?v=kdLNBFaw1As
8. द हिंदी. (27 अगस्त 2019). नानाजी देशमुख: समाजसेवा के लिए जिन्होंने अपना सबकुछ छोड़ा. Retrieved जुलाई 5, 2020,fromhttp://thehindi.in/nanaji-deshmukh-for-social-service-who-gave-up-everything/
9. आज तक. (25 जनवरी 2019). नानाजी देशमुखः सामाजिक कार्यों के लिए छोड़ दी थी राजनीति. Retrieved जुलाई 5, 2020,fromhttps://aajtak.intoday.in/story/bharat-ratn-nanaji-deshmukh-profile-1-1056945.html
10. द प्रिंट. (27 फरवरी 2020). ग्रामीण विकास का मॉडल देने वाले नानाजी देशमुख जिन्होंने सामाजिक कामों के लिए राजनीति छोड़ी थी. Retrieved जुलाई 5, 2020,fromhttps://hindi.theprint.in/opinion/rss-nanaji-deshmukh-vision-society-political-works-pm-narendra-modi/119693/#
11. एनटी न्यूजट्रैक. (2 फरवरी 2019).अंत तक सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित रहे नानाजी देशमुख. Retrieved जुलाई 5,2020,fromhttps://newstrack.com/uttar-pradesh/social-dedicated-grandfather-313696.html
12. पत्रिका. (27 फरवरी 2017). यू ही कोई कोई बन सकता नानाजी देशमुख. Retrieved जुलाई 5, 2020,fromhttps://www.patrika.com/chitrakoot-news/nanaji-deshmukh-complete-life-journery-news-in-hindi-1519503/
13. राय, अभिषेक कुमार. (2021, फरवरी 28). समाज कार्य के पर्याय नानाजी. युगवार्ता, पे. 4-5.